प्रश्नः

''धर्म में अधिकार यदि केवल बाइबल के पास ही है, तो लोग बाइबल की व्याज़्या अपने-अपने ढंग से ज़्यों करते हैं?''

उज़रः

सुधार लहर का एक प्रमुख सिद्धांत यह था कि ''सच्चे धर्म का आधार पवित्र शास्त्र ही है'' और ''बाइबल से बाहर की किसी शिक्षा को स्वीकार नहीं किया जाएगा।''[1]

सब कलीसियाएं उसी मार्गदर्शक को मानने का दावा करती हैं, परन्तु ऐसी सैकड़ों कलीसियाएं हैं जिनकी शिक्षाएं अलग-अलग हैं!

गड़बड़ कहां है? यदि धर्म में हमें केवल बाइबल की ही बात माननी आवश्यक है, तो लोग इसकी अलग-अलग व्याज़्या ज़्यों करते हैं? उसी बाइबल से सैकड़ों कलीसियाएं बन जाती हैं, तो इसका अर्थ स्पष्ट तौर पर यही है कि समस्या कहीं न कहीं सज़्प्रेषण या संवाद अर्थात संदेश में है। यह तो ऐसा है जैसे कोई सेनापति अपनी टुकड़ियों को आदेश देकर भेजता है। वे टुकड़ियां उसके आदेश को पढ़कर तुरन्त सैकड़ों कज़्पनियों में बंट जाती हैं और शत्रु के बजाय वे आपस में ही लड़ने लगती हैं! इसी तरह, परमेश्वर हमें अपना वचन देता है, और उस वचन का अध्ययन करने के बाद, हम सब शत्रु के बजाय एक दूसरे से झगड़ा करने वाले गुट बन जाते हैं! कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ ज़रूर है!

तो फिर गड़बड़ कहां है? हम इसी प्रश्न का उज़र देना चाहते हैं।

गलती किसकी है?

सबसे पहले, आइए खुद से पूछते हैं कि यह किसकी गलती है। हर प्रकार के संप्रेषण में तीन बातें होती हैं: स्रोत, संदेश और प्राप्तकर्ज़ा। किसी मित्र को पत्र लिखने के समय आप स्रोत, पत्र संदेश और आपका मित्र प्राप्तकर्ज़ा होता है। किसी भी वार्तालाप में, एक वज़्ता (स्रोत), बात (संदेश), और श्रोता (सुनने वाले) होते हैं। बाइबल के सज़्बन्ध में, भी यही बातें लागू होती हैं। 2 तीमुथियुस 3:16, 17 पर विचार करें: ''हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।'' परमेश्वर (अर्थात स्रोत) द्वारा पवित्र शास्त्र या बाइबल (अर्थात संदेश) मनुष्यों (अर्थात प्राप्तकर्ज़ाओं) को दिया गया था। इसलिए यदि परमेश्वर और मनुष्यों के बीच संप्रेषण का विश्लेषण होता है, तो इसमें ये तीनों बातें होनी चाहिए कि या तो यह परमेश्वर की या संदेश की या फिर मनुष्य की गलती है। किसका दोष हो सकता है?

परमेश्वर की गलती?

बाइबल को एक ही तरह से न समझ पाने के कारण जब हम अलग-अलग कलीसियाओं में बंट जाते हैं तो ज़्या यह परमेश्वर की गलती होती है?

ज़्या परमेश्वर मनुष्यों से पहेलियों में बातें करता था? अन्यजातियों के देवताओं के विषय में कहा जाता है कि वे ऐसे बात करते थे जिससे उनकी बातों को समझने में कठिनाई होती थी। कई बार उनके विकृत संदेशों पर विश्वास करके लोगों का विनाश भी हुआ।

ज़्या परमेश्वर ऐसा है? ज़्या ऐसा संदेश जो उद्धार भी करता है और नाश भी, देकर वह लोगों को भरमाता है? नहीं! जैसे किसी ने लिखा है:

> बाइबल परमेश्वर की पहेली नहीं है, यद्यपि कुछ लोग इसे पहेली की तरह ही देखते हैं। वे छानबीन करते, शोध करते, खोज करते और अनुमान लगाते हैं; कभी वे यह ''ढंग'' आजमाते, कभी वह ''ढंग''; फिर वे संज़्याओं को जोड़ते, भाग करते, गुणा करते और घटाते हैं। और अन्त में कुछ विशेष वचनों के बहुत ही ऊटपटांग ''अर्थ'' निकालते हैं ...।
>
> बाइबल कोई पहेली नहीं है; यह चज़्कर में डालने वाली कोई चीज़ नहीं है; यह गुप्त और अनापेक्षित अर्थों से भरी पुस्तक नहीं है; यह कोई क्रॉसवर्ड पज़्ज़ल (पहेली) नहीं है।[2]

परमेश्वर हमसे पहेलियों में बात नहीं करता, ज़्योंकि वह न्याय करने वाला परमेश्वर है और चाहता है कि हम बाइबल को समझ लें। उद्धार पाने के लिए हमें सच्चाई का पता होना चाहिए (यूहन्ना 8:32)। हमारा न्याय वचन से ही होगा (यूहन्ना 12:48)। यदि परमेश्वर हमसे उज़्मीद करता है कि हमें यह पता चल जाए कि हमारा न्याय इसी से होगा, तो उसके लिए हमारे सामने पहेली डालना अनुचित, या सुलझाना लगभग असज़्भव होगा।

परमेश्वर हमसे पहेलियों में बात इसलिए भी नहीं करता ज़्योंकि वह प्रेम करने वाला परमेश्वर है। डूब रहे आदमी की कल्पना करें, जो अपने आप को बचा नहीं सकता। किनारे पर खड़ा कोई आदमी जो उसे बचा सकता है, उसे इशारा करते हुए कहता है, ''यदि तुम इस पहेली को सुलझा दो, तो मैं तुज़्हें बचा लूंगा!'' हम खोए हुए हैं, आशाहीन हैं, असहाय हैं! हमें बचाने से पहले ज़्या परमेश्वर हमसे कोई पहेली बूझने के लिए कहेगा? हमारा परमेश्वर ऐसा नहीं है!

अन्य शज़्दों में, परमेश्वर बाइबल के द्वारा हमसे पहेलियों में बातें नहीं करता ज़्योंकि वह *धर्मी* है और ऐसी बातें करना उसके स्वभाव के अनुकूल नहीं है, और वह *प्रेम* है तथा उसके लिए ऐसा करने का अर्थ प्रेम को दिखाना नहीं होगा।

दूसरी ओर, यह परमेश्वर की गलती हो सकती है ज़्योंकि वह मनुष्य के सिर के ऊपर से बोलता है। यह बात अधिक विचारणीय लगती है। परमेश्वर के विचार और मार्ग मनुष्य के विचारों से कहीं अधिक ऊंचे हैं (देखिए यशायाह 55:8, 9)।

यह कहना कि परमेश्वर हमारी समझ के अनुसार हमारी आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपने विचारों को नहीं बदल सकता, परमेश्वर की सराहना करना नहीं है! कई बार हम किसी प्रचारक के लिए कहते हैं: ''कितना ज़बरदस्त है! कितनी गहराई में चला गया था वह!'' यह कहने से हमारा अभिप्राय होता है: ''लगा तो बहुत अच्छा, पर मेरी समझ में नहीं आया कि उसने ज़्या कहा!'' जब हम यह कहते हैं, तो हम बोलने वाले की प्रशंसा *नहीं कर रहे होते।* कोई वज़्ता जो लोगों से उस ढंग से बात नहीं करता जिसे वे समझ सकते हों तो उसे अच्छा संदेश देने वाला नहीं कहा जा सकता! फिर भी कुछ लोग बहुत जटिल विषयों पर इस ढंग से बात कर सकते हैं कि साधारण लोग भी उन्हें समझ सकते हैं। ज़्या परमेश्वर उनसे कम योग्य है?

इस पर ऐसे विचार करें: बोलने वाले के लिए आवश्यक है कि किसी भी कठिन विषय को समझाने के योग्य बनाने के लिए, उसे विषय, श्रोताओं तथा संप्रेषण के ढंग का पता हो। निश्चय ही परमेश्वर अपने विषय को जानता है। वह अपने सुनने वालों को अच्छी तरह से जानता है, ज़्योंकि मनुष्य को उसी ने बनाया है। और वह जानता है कि संप्रेषण या संवाद कैसे करना है ज़्योंकि संप्रेषण के नियम उसने स्वयं ही बनाए हैं। निश्चय ही परमेश्वर अपने विचारों को मनुष्य की समझ तथा आवश्यकताओं के अनुसार ढाल सकता है!

यदि हम कहते हैं कि परमेश्वर मनुष्य से ऐसे बात नहीं कर सकता जिससे उसे समझ आ सके, *तो हम कह रहे होते हैं कि परमेश्वर कुछ करना तो चाहता है, लेकिन कर नहीं सकता!* मनुष्य के साथ संवाद करना उसकी सामर्थ से बाहर नहीं है! न तो ऐसा है कि परमेश्वर ऐसा प्रकाशन देना नहीं चाहता और न ही वह अयोग्य है जिसे हम समझ सकें। यह परमेश्वर की गलती *नहीं* है!

बाइबल की गलती?

ज़्या यह बाइबल की गलती है? ज़्या बाइबल ऐसी है जिसे हम समझ ही *नहीं सकते?*

ज़्या परमेश्वर की सच्चाई को व्यज़्त करने के लिए मानवीय भाषा काफ़ी नहीं है ? ज़्या उन सच्चाइयों को व्यज़्त करने के लिए जो परमेश्वर हमें बताना चाहता है पर्याप्त शज़्द नहीं हैं ? यदि ऐसा है, तो केवल धर्म ही एक ऐसा विषय है जिसके लिए मनुष्य की भाषा काफ़ी नहीं है। हर युग की सब सच्चाइयों अर्थात इतिहास, विज्ञान, इलेज़्ट्रोनिज़्स आदि की बातें इन्सान की भाषा में ही व्यज़्त की गई हैं। यदि मनुष्य को चांद तक ले जाने के लिए आवश्यक संवाद उपलज़्ध कराने के लिए मनुष्य की भाषा पर्याप्त है, तो उसे स्वर्ग तक ले जाने में सहायता के लिए मनुष्य की भाषा पर्याप्त ज़्यों नहीं है ?

परमेश्वर ने मनुष्य पर अपनी इच्छा प्रकट करते हुए, शज़्दों का ही इस्तेमाल किया। पौलुस ने कहा, ''हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में, आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला मिलाकर सुनाते हैं'' (1 कुरिन्थियों 2:13)। परमेश्वर का प्रकाशन इन *बातों* से ही मिला है। यदि बातें या शज़्द परमेश्वर का संदेश प्रकट करने के लिए पर्याप्त नहीं थे, तो परमेश्वर को यह मालूम नहीं था कि यह ज़्या हो रहा है। वही तथ्य कि उसने शज़्दों का इस्तेमाल किया, मुझे बताता है कि शज़्द उसकी बात हम तक पहुंचाने के लिए पर्याप्त हैं।

ज़्या मनुष्य की भाषा इतनी अस्पष्ट है कि उसे समझा नहीं जा सकता ? यदि ऐसा होता, तो बाइबल के प्रत्येक पद के कई - कई अर्थ निकाले जा सकते थे, और उनमें से किसी का भी अर्थ वह न होता जो वास्तव में है। तथ्यों के मामलों में, असहमति बहुत कम पाई जाती है। उदाहरण के लिए, आज भारत का राष्ट्रपति कौन है ? आप कैसे जानते हैं ? ज़्योंकि आपने इन्सानी भाषा में यह बात सुनी है। इसलिए भाषा इतनी अस्पष्ट नहीं है कि लोग इस पर सहमत ही न हों कि ज़्या कहा गया है।

बाइबल बहुत से विषयों, जैसे पुनरुत्थान, पर अस्पष्ट नहीं है। *बाइबल की भाषा* से यही समझ आता है कि यीशु मुर्दों में से जी उठा था।

बाइबल को एक समान न समझ पाने की हमारी समस्या उतनी इस तथ्य में नहीं है कि बाइबल अस्पष्ट है, जितनी इसमें है कि हम इसका दूसरी किताबों की तरह अध्ययन नहीं करते। इतिहास की किसी भी किताब के बारे में यह कहने की कल्पना करें: ''जॉर्ज वाशिंगटन के अमेरिका के पहले राष्ट्रपति होने का अर्थ यह हो सकता है कि वह सचमुच में राष्ट्रपति थे या इसका अर्थ कुछ और भी हो सकता है। मैं अपनी मर्जी से यही समझ लेता हूं कि वह राष्ट्रपति थे।'' इतिहास को हम ऐसे नहीं पढ़ते; हमें चाहिए कि बाइबल को भी ऐसे न पढ़ें। शज़्दों का एक ही समय में विपरीत अर्थ नहीं हो सकता। बाइबल के पास आने पर भाषा की अस्पष्टता कहीं आड़े नहीं आती। इसके बजाय, समस्या हमारे अपने व्यवहार से पैदा होती है। इसलिए हम निष्कर्ष निकालते हैं कि गलती बाइबल की नहीं है।

मनुष्य की गलती?

बाइबल को एक ही तरह से न समझ पाने में गलती ज़्या मनुष्य की है ? बाइबल की अलग-अलग व्याज़्याएं न तो परमेश्वर और न ही बाइबल की गलती हैं, इसलिए इसका

अर्थ यह हुआ कि यह गलती मनुष्य की ही है। लोग ही पवित्र शास्त्र की गलत व्याज़्या करने लगते हैं। जिस कारण वे पवित्र शास्त्र को *गलत समझते* और गलत अर्थों में लागू करते हैं। सो वे परमेश्वर की इच्छा को मानने में असफल रहते हैं।

लोग कहते हैं, ''बाइबल एक ही तरह से समझ ज़्यों नहीं आती?'' हमारा जवाब है: ''ज़्योंकि वे बाइबल के युग को नहीं समझते।'' यह तो हो सकता है कि वे बाइबल को *गलत समझें,* परन्तु परमेश्वर की पुस्तक से अलग-अलग लोगों को अलग-अलग अर्थ मिलते हैं, तो इसका अर्थ यही है कि वे इसे समझ नहीं रहे हैं।

लोग बाइबल की गलत व्याज़्या ज़्यों करते हैं?

इससे यह प्रश्न उठता है कि इतने लोग बाइबल की गलत व्याज़्या ज़्यों करते हैं? इसके बहुत से उज़र हो सकते हैं।

कुछ लोग बाइबल का अध्ययन नहीं करते। उनकी बाइबलें अलमारियों में पड़ी-पड़ी धूल चाटती रहती हैं। कोई जब यह कहता है कि ''मुझे बाइबल की समझ ऐसे नहीं आती,'' तो वह इसे इसलिए नहीं समझता ज़्योंकि उसने इसका अध्ययन किया ही नहीं है। कुछ लोग कार्टून पात्र चार्ली ब्राउन जैसे होते हैं जो कहता है, ''मैं अपने आप को प्रकाशितवाज़्य की पुस्तक का विद्वान मानता था, जब तक मेरी मुलाकात ऐसे आदमी से नहीं हुई जिसने प्रकाशितवाज़्य की पुस्तक पढ़ी हुई थी।'' पूरे प्रयास से बाइबल अध्ययन करने को तैयार हुए बिना आप बाइबल को सही ढंग से समझने की उज़्मीद नहीं कर सकते! (देखिए मज़ी 5:6; 2 तीमुथियुस 2:15; 1 पतरस 2:2)।

कुछ लोग बाइबल को सच्चाई के रूप में ग्रहण नहीं करते। हो सकता है कि वे यह तो मानते हों कि बाइबल में सत्य है, परन्तु वे यह नहीं मानते कि बाइबल सत्य *है*। उनका मानना है कि यह ऐसी सच्चाई है जिसमें तथ्य के साथ कहानी मिश्रित है। जब उन्हें इसकी कुछ बातों पर विश्वास ही नहीं है तो वे इसकी सही व्याज़्या कैसे कर सकते हैं? बाइबल को समझने के लिए, पवित्र शास्त्र के प्रति उचित व्यवहार का होना अर्थात बाइबल को परमेश्वर के वचन के रूप में मानना (1 थिस्सलुनीकियों 2:13), और इससे प्रेम करना आवश्यक है (2 थिस्सलुनीकियों 2:8-11)।

कुछ लोग निहित स्वार्थ के लिए यह गलती करते हैं। शज़्दकोश में ''निहित स्वार्थ'' का अर्थ ''किसी बात में दिलचस्पी होना, जिसे बदलने से वह छिन जाएगी'' बताया जाता है। कलीसिया की बहाली की लहर के एक अगुवे से प्रैस्बिटेरियन चर्च में नियुज़्ति के समय पूछा गया, ''ज़्या आप फिलाडेल्फिया के विश्वास के अंगीकार को मानते हैं?'' अपने विश्वास से कोशिश करते हुए, उसने उज़र दिया, ''जहां तक मुझे लगता है यह बाइबल से सहमत है।'' कुछ लोग इसके बिल्कुल विपरीत काम करते हैं: वे बाइबल को केवल वहां तक मानते हैं जहां तक यह उनकी शिक्षा से मेल खाती है।

कई बार, सच्चाई को सीखने वाले लोग अपने प्रचारकों के पास जाकर उनसे पूछते हैं, ''इसका ज़्या अर्थ है?'' उन्हें आश्चर्य होता है कि प्रचारक उस बात से सहमत नहीं होता जो

उसने बाइबल से सीखी होती है। पर उन्हें हैरान ज़्यों होना चाहिए? ज़्या किसी कलीसिया के प्रचारक का उस कलीसिया की शिक्षा में विश्वास करने का निहित स्वार्थ है? उसकी रोजी-रोटी का सवाल है! वह ज़्यों मानेगा कि कोई दूसरी शिक्षा सही है?

हम सब ने जो कुछ पहले सीखा होता है उसमें हमारा निहित स्वार्थ होता है। यदि आप अपने विश्वास में बदलाव करते हैं, तो ज़्या इससे आप को कोई हानि नहीं होगी? इसलिए बाइबल को सही ढंग से समझने के लिए ज़्या होना आवश्यक है? निष्कपट मन (लूका 8:15)। यदि आपका मन साफ है, तो आप सच्चाई को पाने के लिए कुछ भी त्यागने के लिए तैयार होंगे, उससे आप को चाहे कितना भी लाभ ज़्यों न होता हो या वह आपके लिए कितना भी सुविधाजनक या आरामदायक ज़्यों न हो!

कुछ लोग बाइबल को अपनी पिछली सोच में से ही देखते हैं। यह तो ऐसा है जैसे उन्होंने रंगदार ऐनक लगाई हो। संसार को लाल ऐनक से देखें तो आप को सब कुछ लाल ही दिखाई देगा, नीली से देखोगे तो दुनिया नीली ही दिखेगी। बाइबल के पास वे अपने ही विश्वासों की पुष्टि के लिए आते हैं। बाइबल के पास इस तरह आने से उन्हें वही दिखाई देगा जो वे देखना चाहते हैं।

पूर्वधारणा के कारण ही यहूदी लोग मसीह के दावों को नहीं समझ पाए थे। वह उनके पहले से ठहराए गए ढंग के अनुकूल नहीं था इसलिए उन्होंने उसे क्रूस पर चढ़ा दिया। मैं किसी को यह सिखाने की कोशिश करते हुए कि बाइबल कहीं विश्वव्यापी बिशप की बात तो नहीं करती, उसे मत्ती 16:18 के विषय में बता रहा था जहां यीशु ने कहा था, ''मैं इस चट्टान पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा।'' उसका उज़र था: ''पर जब मैं इस पद को अपने विश्वास से पढ़ता हूं, तो मुझे इसमें एक विश्वव्यापी बिशप दिखाई देता है।''

मुश्किल यही है कि जब हम सब बाइबल को अपने ही विश्वास से पढ़ना चाहते हैं तो वही देखते हैं जो हम देखना चाहते हैं। हमें ज़्या करना चाहिए? खुला मन और बिरीया के लोगों की आदत होना, जो यह देखने के लिए कि जो बातें पौलुस ने उन्हें सिखाई थीं सही भी हैं या नहीं, पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ते थे (प्रेरितों 17:11)। बाइबल की सही व्याज़्या के लिए, बिना किसी पक्षपात के, यह जानने के लिए कि जो कुछ आपने सीखा है वह सत्य है या नहीं, पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ें।

कुछ लोग पवित्र शास्त्र को अपने विचारों के अनुकूल बनाने के लिए तोड़ते-मरोड़ते हैं। पतरस ने कहा कि पौलुस की पत्रियों में कुछ ऐसी बातें थीं जिन्हें ''अनपढ़ और चंचल लोग उनके अर्थों को ज़ी पवित्र शास्त्र की और बातों की नाईं खींच तानकर अपने ही नाश का कारण बनाते हैं'' (2 पतरस 3:16)। अपने विचारों के अनुसार बनाने के लिए पवित्र शास्त्र की ''खींच-तान'' करने का अर्थ है कि ''यदि इसका अर्थ वह नहीं है जो मैं समझता हूं, तो मैं इसे अपने हिसाब से अर्थ दूंगा!'' इसका एक उदाहरण 1 कुरिन्थियों 1:17 से लिया जा सकता है जहां पौलुस के यह कहने का कि ''मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने को नहीं, ... भेजा है,'' लोगों द्वारा यह अर्थ लगाना है कि बपतिस्मा आवश्यक नहीं है, जबकि नया नियम सिखाता है कि बपतिस्मा आवश्यक है।

यदि बाइबल उससे जिसे हम मानते हैं कोई अलग शिक्षा देती है, तो अपने विश्वास के अनुसार पवित्र शास्त्र को मोड़ने के बजाय हमें चाहिए कि हम अपना विश्वास पवित्र शास्त्र की ओर मोड़ लें।

कुछ लोग बाइबल अध्ययन करने के गलत ढंगों का इस्तेमाल करते हैं। कुछ लोग मन के अच्छे होते हैं, वे बाइबल का सम्मान करते हैं और बाइबल का अध्ययन वे पहले से मन बनाकर नहीं करना चाहते। पर फिर भी वे गलतियां कर जाते हैं क्योंकि वे व्याख्या के नियमों के बुनियादी सामान्य ज्ञान को नज़रअन्दाज कर देते हैं। उनके कुछ नियम इस प्रकार हैं:

1. संदर्भ पर ध्यान दें। पूछें, कि कौन? किससे? कब? किस उद्देश्य से बात कर रहा है?
2. उस विषय पर *सारी* सच्चाई प्राप्त करें।
3. स्पष्ट समझ आने वाले पदों से कठिन पदों की व्याख्या करें।
4. मूल और सांकेतिक बातों में अन्तर करें।
5. पूछें कि ''यह आयत मेरे ऊपर कैसे लागू होती है?''

लोग इन नियमों का उल्लंघन करते हैं, उदाहरण के लिए, जब वे यह सिखाते हैं कि वापस आकर मसीह पृथ्वी पर एक राज्य स्थापित करेगा और एक हज़ार वर्ष के लिए यहां पर राज्य करेगा। इस व्याख्या का आधार वे सांकेतिक और अस्पष्ट आयतों को मान लेते हैं और उन आयतों को छोड़ देते हैं जो साफ तौर पर बताती हैं कि परमेश्वर का राज्य इस जगत का *नहीं* है (यूहन्ना 18:36)।

बाइबल की इतनी गलत व्याख्या में मूल समस्या यह है कि कुछ लोग सच्चाई से इतना प्रेम नहीं करते। 2 थिस्सलुनीकियों 2:10–12 पर विचार करें:

> ... उन्होंने [नाश होने वालों ने] सत्य के प्रेम को ग्रहण नहीं किया जिस से उन का उद्धार होता। और इसी कारण परमेश्वर उन में एक भटका देने वाली सामर्थ को भेजेगा ताकि वे झूठ की प्रतीति करें। और जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, बरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं।

ध्यान दें कि यहां कहा गया है: (1) कुछ लोग नाश होंगे। (2) उनका नाश झूठ पर विश्वास करने के कारण होगा। (3) विश्वास करने के लिए परमेश्वर उन पर एक सामर्थ भेजेगा। (4) परमेश्वर उन पर वह सामर्थ उस झूठ पर विश्वास करने के लिए भेजेगा *क्योंकि* वे ''सत्य की प्रतीति नहीं करते।'' जब किसी व्यक्ति के मन में सत्य के लिए प्रेम नहीं रहता, तो उस खाली हुई जगह में झूठ भर जाता है। यीशु ने कहा, ''ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे'' (मत्ती 7:7)। यदि हम सच्चाई को जानने के लिए परिश्रम से ढूंढ़ें, तो अवश्य पा लेंगे! समस्या यह है कि लोग सच्चाई से इतना प्रेम नहीं करते कि वे परिश्रम करके इसे ढूंढ़ लें।

सारांश

इसके और भी कई कारण हो सकते हैं, परन्तु यह जानने के लिए कि लोग बाइबल की

अलग-अलग व्याख्या ज़्यों करते हैं, यही काफी हैं।

आप इन विचारों को मानें या न, पर इतना तो पक्का है कि आपको यह मानना पड़ेगा कि यह परमेश्वर की गलती नहीं है, न ही बाइबल की गलती है कि लोग बाइबल की बात पर सहमत नहीं हैं, यह तो हमारी गलती है! हमारे असहमत होने का कारण हो सकता है कि *मैं* सही ना होऊं, और *आप* सही न हों, पर बाइबल तो सही *है!* शायद हम दोनों सच्चाई से चूक गए हैं, पर सच्चाई तो है, और यह बाइबल में मिल सकती है।

ज़्योंकि बहुत से लोग बाइबल की गलत व्याख्या करते हैं, तो फिर मुझे यह पता कैसे चल सकता है कि मेरी व्याख्या सही है? बहुत स्पष्ट समझ आने वाली आयतों की व्याख्या करें। उदाहरण के लिए, सुसमाचार में तथ्य, आज्ञाएं और प्रतिज्ञाएं मिलती हैं। सुसमाचार के द्वारा उद्धार पाने के लिए, बुनियादी तथ्यों पर विश्वास करना, स्पष्ट आज्ञाओं को मानना, और स्पष्ट प्रतिज्ञाओं पर विश्वास करना है! यदि आप मसीही नहीं हैं, तो इस मूल तथ्य पर विश्वास करें कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है; मन फिराने और बपतिस्मा लेने के लिए उसकी स्पष्ट आज्ञाओं का पालन करें (प्रेरितों 2:38); पवित्र आत्मा के दान, पापों की क्षमा, और अनन्त जीवन की आशा की बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं पाएं! है न आसान?

अपने इस ज्ञान को व्यवहार में लाकर वही ज़्यों नहीं करते जो प्रभु चाहता है कि आप करें?

पाद टिप्पणियां

[1]जैसी लाइमैन हर्लबर्ट, *द स्टोरी ऑफ़ द क्रिश्चियन चर्च* (फिलाडेल्फिया: जॉन सी. विंस्टन कं. 1933), 159-160. [2]सिटी बीच चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, पर्थ, वैस्टर्न ऑस्ट्रेलिया की साप्ताहिक पुस्तिका, *क्रिश्चियन रिपोर्टर,* 22 जनवरी 1971 में फैनिंग येटर टैंट, ''द बाइबल इज़ नॉट ए कॉन्ड्रम।''